ड़ा द्वारका नाथ शान्ताराम कोटनिस

का

चीनी प्लैग से संघर्ष

लघु उपन्यास के रूप में

लेखक

शिवराज गोयल

डॉक्टर कोटनिस

–

महाराष्ट्र के कोल्हापुर शहर की कच्ची बस्ती में रह रहे परिवार के कच्चे घर के बाहर एक स्कूल मास्टर आवाज़ देता है

सान्ताराम काका, ओ काका.......
दरवाज़े पर सान्ता राम आते है, सामने मास्टर को देख कर डर जाते हैं, ज़रूर देवारकिया ने गल्ती करी होंगी, हाथ जोड़े खड़ा रहा, ...जी गुरू जी
मास्टर जी - क्यों बच्चे का नाम स्कूल से वापस ले रहे हो? आगे पढ़ाओ, देवा को, वह बहुत अच्छा लड़का है, पढ़ाई में अव्वल, खेलकूद में अव्वल, आज्ञाकारी, वह स्कूल का नाम ऊँचा करता है ।
सान्ताराम- गुरूजी पढ़ाई करली अब मेरा काम समझने दो, पुस्तक का खर्चा है।
मास्टर जी- हमारी स्कूल कमेटी उसका सारा खर्चा उठायेगी, उसे रोको मत,
वो हम सब को अच्छा लगता है ।ज़िले भर में वह स्कूल का नाम ऊँचा करता है।
सान्ताराम- देवा किरपा, आपका बालक है, पर...
मास्टर जी- पर क्या ?
सान्ताराम- गुरू जी, आठ पुस्तक हो गई, मैं भी थक गया हूँ, मेरा काम सम्भालने दो, हम में से कौन इतना पढ़ा,

नौकरी नहीं करानी उसे, ज़मीन सम्भालने दो।
मास्टर- हमारी स्कूल कमेटी उसका सारा खर्चा उठायेगी, उसे रोको मत।
सान्ताराम- जैसा आप कहेंगे, और जैसे विट्ठल का हुक्म।
दो वर्ष बाद फिर यही प्रश्न था,
द्वारका नाथ सब ज़िलों में प्रथम, ज़िले भर में वह स्कूल का नाम ऊँचा करता है। हमारी स्कूल कमेटी उसका सारा खर्चा उठायेगी । स्कूल कमेटी उसे बम्बई में डाक्टरी में भेजना चाहती थी और माँ बाप उसे किसान बनाकर अपने पास रखना चाहते थे ।
सब गाँव वाले भी चाहते थे वह डॉक्टर बनें, आसपास के दौ सो गाँवों में इलाज करने वाला नहीं है, सान्ताराम को मानाया गया, और वह बम्बई के सेठ जी.एस.मेडिकल कालेज में बम्बई भिजवाया गया, जहां चार साल उसने बड़ी लगन से पढ़ाई की, हर विषय में अव्वल, पूरे प्रदेश के कालेजों व देश के मेडिकल कालेजो में सेठ जी. एस. मेडिकल कालेज, बम्बई का नाम चमका।
कालेज के सभागार में प्रखर विद्यार्थियों के नोटिस बोर्ड पर तस्वीर थी उसके नीचें सुनहरी अक्षरों में नाम था-
"द्वारकानाथसान्तारामकोटनिस" M.B.,B.S.(१९३२)
घर के औटले पर, पाँच व्यक्ति बैठे थे-
सान्ताराम, मंदा (द्वारका की माँ), मनोरमा (द्वारका की

छोटी बहन), दत्ता भाऊँ मामा) और द्वारका, कोई किसी से बात नहीं कर रहे थे।

सान्ताराम ने चुप्पी तोड़ी बेटी से कहा ‘जा, मन्नू, अंदर से मामा के लिये दो काकडी और पानी ला’

मनोरमा उठ कर अंदर चली गई,

मामा द्वारका से बोले- देख देवा, चार साल तू बाहर रहा, अब तो यहीं रह, सरकारी नौकरी कर, हम को सम्भाल, बहन की शादी कर, मकान ठीक करा,

मंदा सिसकियाँ भरती बोली- मेरी तो तक़दीर में बेटे का सुख लिखा ही नहीं है, चार साल से आस लगाए बैठी हूँ, देवा आयेगा तो घर में बहु आयेगी, मुन्नी की शादी ये दोनों सम्भालेंगे, मैं तो बस आराम करुँगी, पर मेरी तक़दीर में देव ने सुख लिखा ही नहीं है ।

सान्ताराम बोले- बेटे, आगे पढ़े ही जायगा तो क्या कर लेगा, अब गिरस्ती सम्भाल, दो पैसे कमा, चल, खेत तो मैं देख लूँगा । नौकरी का मन है तो नौकरी कर, नहीं तो दवाखाना खोल लें, सब गाँव वाले भी यही चाहते हैं । मनोरमा की शादी भी अच्छी जगह हो जायेगी।

द्वारका बोला बाबा यह चान्स की बात है कालेज वाले लोग दो साल से मेरे पर खर्चा कर रहे है, मुझें अच्छा सर्जन बन जाने दो, फिर घर ही घर है। मन्नो भी मैट्रिक हो जायेगी।

मनोरमा मामा के लिए काकड़ी, पानी व चा लेकर बाहर आई, उसने सुन लिया था भाई की बात ही चल रही है, तपाक से बोल पड़ी, भाऊँ को बहुत बड़ा डाक्टर बनने दो, पोलिस का थानेदार भी डरता है।

मंदा- तू रहने दे, इन चार सालों में भाऊँ को कितना याद किया है, मेरी अक़्ल ही ख़राब करके रख दी, और इस निरदयी को देखो, तीन राखी पर भी नहीं आया, मेरी बच्ची रोती रोती सोई है। कहती कहती मंदा रोने लगी, आँसू झर झर बहने लगे, हिचकियाँ बंध गई, उसके भाई ने जाकर चुप कराया, आँसू पोंछ कर बोली- भाऊँ क्या बताऊँ साल भर से बुरे सपने आ रहे है, मेरा देव ऊँचे ऊँचे पहाड़ोंपर खड़ा मेरे को हाथ हिलाकर कर कहता 'आई तेरा दूध पिया है तेरा सिर ऊँचा रहेगा'

मामा- दिल छोटा मत कर, चल मेरे साथ साईं बाबा के चल,

द्वारका जैसा रत्न हमें मिला है, हमारे भाग हैं, हमें दुखी थोड़ा करेगा ।

सान्ताराम- देखो, लड़का जैसे कहे, वैसा करो, भाग में जो होगा, मिलेगा,

संत पाडूरंग ने कहा है कि "प्रभु, मी पंतग, तुम्हीं हाथै धागा,"

संतों ने कहा है.जाहे बिधी राखै राम वाँ विधी रहिये,

द्वारिका ख़ुश ख़ुश जा, घट में राम रखना, विट्ठल भला करें।
वह सब के पाँव पड़ा, रात की गाड़ी पकड़, बम्बई पहुँच गया।
कालेज के प्रिंसिपल से मिला,
उसने बताया तुम दो साल में सर्जरी की अग्रणी श्रेणी की डिग्री प्राप्त कर सकते हो। इस शिक्षा के लिये पहले लंदन जाना पड़ता था, बड़े घराने के लड़के अभी भी वहाँ जाते हैं जो खर्चा उठा सकते हैं, पर कोर्स वहीं है, इस साल ही हमें मान्यता मिली है,
तुम्हारे नाम की सब ने मंज़ूरी दी है, मैं भी चाहता हूँ तुम अच्छे सर्जन बनो।
द्वारका नाथ ने धन्यवाद दिया और अपनी रुचि बताई और बाहर आ गया।

संध्या होस्टल के केंटीन में सब विदयार्थीगप्प शप्प कर रहे थे, द्वारका से गोल्ड मेडिल की ट्रीट माँग रहे थे। किसी ने कहा चलो चाइना घूम आते है। मौक़ा है। चीन के नये नेता माओ जेडाग ने पंडित नेहरू से व सुभाष चन्द्र बोस से अपील की है वे भारत से एक डॉक्टरों की टीम चीन भेजे जो जापान- चीन युद्ध में घायल सैनिकों का

उपचार कर सकें।
द्वारका नाथ ने दूसरे दिन नोटिस बोर्ड पर लगी अपील पढ़ी। सीधा प्रिंसिपल के पास गया और चीन जाने की जानकारी चाही, वे बोले तुम्हारे पिताजी माताजी की मं. जूरी का पत्र चाहिए, तुम्हारा एक साल ख़राब होगा, जान का ख़तरा है, वज़ीफ़ा नहीं। अपील का क्या, निकलती रहती है। पंडित नेहरू और सुभाष तो खुद ज़ैल में पड़े हैं, तुम्हें कौन सा मेडिल दे देगें। फिर भी
मर्ज़ी तुम्हारी ।
द्वारका कोल्हापुर लौट आता है।
प्रातः काल का समय था,
सान्ताराम का खेतों में जाने का समय हो रहा था, मंदा भी ठेंजा भाखरी दूध बना कर पति को देने की तैयारी कर रही थी, मनोरमा गाय को चारा देने गई थी, बैलों की जुगाली तैयार कर रही थी,
सान्ताराम मंदा को आवाज़ देकर बाहर आने को कहता है, मंदा चूल्हे से
लकड़ी निकाल, साड़ी के पल्लू से आँखें पोंछतीं बाहर आती है, बोली- क्या कहते हो ?
सान्ताराम ने कहा आज जाने का मन नहीं कर रहा है, हाथ पैर में जैसें जान ही नहीं है।
मंदा बोली चलो अंदर चलें, थोड़ा आराम करने के बाद

चले जाना।

दोनों अंदर चलें जाते हैं, मनोरमा भी आकर स्कूल जाने की तैयारी करने लग जाती है।

बाहर से आवाज़ आती है- आई, मनोरमा, बाबा

तीनों दौड़ कर बाहर आ गए, अरे रे। देव तुम्हीं......

द्वारका- हाँ हाँ मी,

चारों अंदर जाते है मनोरमा भाई के कंधे पर झूल गई, माँ ने बेग लिया, बाबा की आँखें पहली बार नम हो रही थी।

सब चुप । कल ही तो गया था। आज वापस।

तीनों की निगाहों में एक ही प्रश्न था, सब कुशल तो है ?

सान्ताराम ने मंदा से कहा- देख आ गया न तेरा सपूत मेरी मदद कराने।

आखिर बेटा किसका है ?

मंदा का कलेजा धक धक कर रहा था, बेटे के माथे से पसीना पौछें जा रही थी,

चाह रही थी कुछ न पूछूँ और वह भी कुछ न कहे, उसका दिल कह रहा था जो वह कहेगा वह सपने की बात ही होगी।

मनोरमा भाई की पीठ पर लेटी गले में हाथ डालें भाऊँ भाऊँ कहे जा रही थी।

द्वारका ने गला साफ़ कर के बोला - दो तीन महिने चीन जाना चाहता हूँ ।

मनोरमा उछल कर भाऊँ के सामने आ गई, बोली- भाऊँ चीन, वहीं न जो हिमालय पहाड़ के पीछे है, बर्फ से ढका रहता है।
मंदा का सुनते ही सिर घूमने लगा, वह आँखें बन्द करें बेटे की गोद में सिर छुपाके गुम सुम हो गई, उसे सारी दुनिया घूमती नज़र आने लगी, हे देवा, मेरे सपने का पहा. ड उसके पीछे चीन, हे विट्ठल हे माऊली।

द्वारका ने साहस बटोर कर सारी जानकारी दी,
प्रश्न पर प्रश्न,
हमें क्या उनके मरने जीने से, तेरे ही सिर पर शेर ने पिशाब किया है
ऐसी सर्दी में कई बीमारियाँ लग जायगी,
कालेज में किस की सोहबत करता है,
लड़ाई में ही जाना था तो बड़े मामा की तरह जाता, पेन्शन तो मिलती,
कौन लड़की को ले जायेगा ऐसे घर से,
तू होते ही मर जाता तो सब्र तो आ जाता,.........

दो घंटे में बात पूरे शहर में फैल गई ।
द्वारका चीन की लड़ाई में जा रहा है।
कोई कहने लगे बाप ने लड़के को बेच दिया, कोई ज़्यादा

पढ़ाई का नतीजा बता रहे थे, कोई किसी लड़की का चक्कर बता कर घर से भाग जाने का बहाना बता रहे थे।

सान्ताराम ने हिम्मत दिखाई, बेटे से पूछा - कब तक जाना है, जा,
पीठ पर गोली मत खाना, हमारी परवाह मत करना, त. कदीर में होगी ता तेरी
लकड़ी लगेगी, मंदा से बोला- उठ, कलेजा पत्थर का कर, तिलक कर, आर्शीवाद दिया।
द्वारका नाथ ने प्रिंसिपल को पिता की अनुमति का पत्र दे दिया।
तब प्रिपिल बोले चार डाक्टरों और हैं नाम हैं:
श्रीमती ऐम.अटल,
बीजोय कुमार बसु,
एम. आर.चोलकर ,
डी. मुकर्जी,

तुम्हारे हवाई जहाज़ का ख़र्चा २२००० रू सुभाष चंद्र बोस ने मेरे को भेज दिया है। तुम्हारी टीम इन्डियन मेडिकल मिशन १९३८ कहलाई जायेगी, जो परसों बम्बई से चीन के हेन काऊ युहान एयरपोर्ट पर उसी दिन उतर जायेगी। तुम्हारे को कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख माऊ

जेडाग और जूह डे लेने आयेंगे ।
Good luck. Best of journey. Wish you all, great success.

दूसरा अध्याय:

द्वारका नाथ की मेडिकल पढ़ाई के दौरान एक विषय था जो PSM (Preventive Social Medicine) कहलाता है जिसमें प्रकृति के प्रकोप से मानव जाति पर हुई आपदाओं का ज़िक्र आता है तथा मनुष्य ने उनको कैसे दूर किया, इस के उपाय का विवरण होता है। ये विपदासे बिमारियों के रूप में ज़्यादा आई हैं । चीन तो हर बीस तीस साल में इन का शिकार रहा है और यही विश्व व्यापी समस्या बन गई थी, और जिनके फैलने से संसार भर में करोड़ों लोग मरे हैं जैसे प्लेग, तपेदिक, हैज़ा, लाल बुखार आदि, डॉक्टरों ने उन्हें रोकने की कोशिश की है, पर इस दिशा में काफ़ी काम करना बाक़ी भी है।
द्वारका नाथ का चीन आने का एक कारण यह भी रहा। वह इस दिशा में अधिक जानकारी लेना चाहता था। यह भी एक मुख्य कारण था जो उस को चीन आने के लिए प्रोत्साहित करने लगा था।
Indian Medical Misson की टीम को लेकर हवाई जहाज़ ‘हेन काऊ यूहान ऐयर पोर्ट’ पर रात के आठ बजे

उतरा। बाहर काफ़ी सर्द हवा थी, अंधेरा था, व गहरा सन्नाटा था। अगर वे पाँच न होते तो शायद हिम्मत ही न होती कि आगे बढ़े।

सामने कुछ व्यक्ति अर्धसैनिक पोषक में थे, टीम के स्वागत के लिये ही आये थे, टीम ने श्रीमती अटल को अपना नेता मान रखा था वहीं आगे बढ़ी दो व्यक्ति उधर से आगे बढ़े, हाथ मिलाया और टीम का परिचय कराया। उन्होंने अपना नाम माओ जेडाग व झूडे बताया। उन्होंने कहा सामान आ जायेगा ।

बाहर आये, एक ट्रक नुमा गाड़ी से क़रीब तीस मील दूर एक इमारत के सामने उतारा, पाँचों को एक बड़ा कमरा दिखाया, जिसमें रोशनी बिस्तर मच्छर दानी व अलमारी थी। खाने के लिये पास में खड़े अर्दली को हिदायतें देकर, सुबह आठ बजे तैयार रहने को कह कर Good Night कह कर चले गये।

अर्दली ने एक कोने में मेज़ें ला कर रख दी, शायद वे खाना खाने के लिये लगाई गई थी, टूटीं फूटी भाषा व इशारे से पूछा चाय लाऊँ क्या । चाय आ गई, काली चाय व डबल रोटी थी।

एक घंटे बाद, खाना आया, उबले आलू शकरकंदी काली दाल व डबल रोटियाँ थी। सबने मिलकर खाना खाया । बाथरूम बाहर था, सिकुड़ते सिकुडते गये,

आकर थोड़े कपड़े बदले, और बिस्तर में दो कम्बल ओड़ कर सो गये।

अगले दिन सुबह,
अर्दली ने सात बजे ही कमरे में खटपट शुरू कर दी। सब को बिस्तर से बाहर निकलना पड़ा, जग में गर्म पानी था, एक डिब्बे में यहाँ का बना दंत मंजन था, हम सब तीस मिनिट में तैयार हो गये। ठीक आठ बजे, हमें लेने सेना का एक अफ़सर आया, बिना किसी औपचारिकता के वह हमें साथ चलने को कह रहा था तथा हमारा सामान साथ ले चलने का इशारा कर रहा था, हमने अपने अपने बैंग उठाये और उस के पीछे पीछे चल दिये, रात जैसी ही ट्रक थी उसमें बैठ गये, हम अज्ञात लक्ष्य को चल दिये। कच्ची सड़क थी, दोनों तरफ़ खेत थे, धुंधला पन होने से ज़्यादा कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। क़रीब तीन घंटे तक हम चलते रहे, हमारी गाड़ी एक अस्पताल के सामने जा कर रूकी बैठा, हम को वहाँ कोई हलचल नहीं दिखाई दी, लेकिन वह सैनिक अफ़सर हमें एक कमरे में ले गया, वहाँ एक अंग्रेज़ व्यक्ति वैठा था उसने अपनी कुर्सी से उठ कर हमारी तरफ़ हाथ बढ़ाया और Good Morning to all कहा, हमने भी एक आवाज़ में Good Morning Sir कहा, उसने कहा I am Dr Normam Bethan I

am a Canadian, I look after this peace hospital but now it is like a military hospital, only wounded soldiers come, not much staff so I need your help, please take your seats we will discuss about the work.

हम सामने पड़ी ऐेक लम्बी बैंच पर बैठे तो वह फिर कहने लगे

You see Doctors,
There are two types of jobs
One in this hospital
Second, on the battlefront,
You are at your choice,

If you prefer battlefront, you will get, here one dormenlory, so you give me your reply, I will inform commander Zu De.

हम सब ऐेक दूसरे की शक्ल देखने लगे, यह तो तय था हमारी टीम से मीस्टर और मीसेस अतुल तो यही रहेगी, मैं और चौलकर ने फ्रन्ट की हा भरी,
बसु और मुकर्जी ने डे, बेथान के साथ काम करने की हाँ कर दी।

वहीं ट्रक हम दोनों को लेकर चल पडा़।

हमारी गाड़ी उस पूरे दिन चली, रास्ते में उस सैनिक अफ़सर ने हमें उबले आलू दिये पानी की बोतल दी जिसका पानी ठंडा था, चौलकर के दाँत में दर्द होने लगा। वह आलू भी न खा पाया। कुछ उसका पेट खराब होने लगा, रास्ते में दो बार गाड़ी रोकनी पड़ी। क़रीब नौ बजे हमारी गाड़ी एक छावनी जैसी जगह रूकी, हम दोनों को उतरने को कहा गया, ऐक टेन्ट में हमें दो बिस्तर दिखा दिये गये, मुझें तो तकिये पर सिर रखते ही नींद आ गई ।

सुबह, फिर वही ट्रक का सफ़र शुरू हो गया, चौलकर को बेचैनी वैसी ही रही, न कुछ खाया न पीया। रास्ते में ऐक जगह रूके वहाँ ज्वार के आटे की रोटी उस पर माँस की दो बोटी व मेथी की उबली भाजी, देसी दारू की सी बदबू वाली पेय, खाने में मिली, मुझें शाकाहारी खाना चाहिये था, बोटी नहीं ली, चौलकर ने कुछ खाया,

मैंनें उत्सुकता वस पूछा हम कहाँ जा रहे हैं, उत्तर मिला नार्थ बोडर पर। रात क़रीब दस बजे हम ऐक छावनी में उतरे। वैसे ही तम्बू में हमें सोने को कहा। रात का खाना पास वाले तम्बू में मिल रहा था, जा कर लेना था, कुछ थकान, कुछ सरदी, तेज बर्फीली हवा, अंधेरा, मैं तो बिस्तर पर पड़ गया और नींद आ गई ।

सुबह उठा, चारों तरफ़ कोहरा तेज ठंडी हवा,
काली चाय व कुछ बिस्कुट का नाश्ता था,
हमें फील्ड कमांडर Du ने बुलाया, बडी़ अदब से स्वागत किया, कहा-
हमारे सैनिक जख़्मी होते हैं और उनकी मरहम पट्टी न होने से तड़प तड़प कर दम तोड़ देते हैं, डाक्टर नहीं है आप मदद करो, साधन सिमित हैं । आपको अग्रिम चौकियों तक नहीं जाना पडेग़ा । घायल सैनिकों को आपके पास लाया जायगा,
यहीं टेंट हैं वे ही वार्ड हैं। जो सैनिक ठीक नहीं नहीं हो सकें उन्हें जह़र दे के मार सकते है, ये मेरा हुक्म है। चलो आपको सर्जिकल व मेडिकल वार्ड दिखा देता हूँ।
हम Du के साथ पास के टेंट में गये,
मरीजों़ की चींख पुकार सुन कर दिल हिल गया।
बम्बई के अस्पतालों में कभी ऐसी हालत देखी नहीं थी,
ऐक ऐक खाट पर दो दो तीन तीन सिपाही, बीस खाँटों का वार्ड, कुल ऐक मेल नर्स। घावों पर मक्खियाँ भिनभिना रही है, कोई रूई नहीं, पट्टी नहीं, दवा नहीं, कटे पीटे हाथ पाँव वाले सैनिक को तकिये से सांस रोक कर मारा जा रहा था। द्वारका का सिर चक्कर खाने लगा,

द्वारका ने कमांडर ड्यू को कहा- चलो, आपके दफ्तर में

चलते हैं।
वे तीनों वापस आ जाते हैं,
द्वारका ड्यू से पूछता है- सैनिक आपके हैं, आप इन पर कितना खर्च और कर सकते हो ?
ड्यू चौंक गया, ऐक नागरिक के मुँह से ऐसी बात की उसे उम्मीद नहीं थी, कुछ देर सिर नीचा कर सोच कर बोला- आप मुझें आपकी योजना बताये, फिर कह सकता हुँ।
द्वारका ने कहा केवल सफाई करेंगे, कुछ ज़रूरी दवाओं का इन्तज़ाम करो, पाँच वार्ड वाँय, कुछ खाँटे, कुछ मच्छरदानी, मुझें कल ही चाहिये ।
कमांडर ड्यू ने कहा- कुछ कल, कुछ दो तीन रोज़ में कर दूंगा ।
द्वारका ने भगवान विट्ठल का ध्यान कर, उसी वक़्त वार्ड की तरफ घुमा और वार्ड में घूस गया।

मेडिकल वार्ड में गया,
स्टाफ़ में कुल मिलाकर पाँच व्यक्ति, सबको नमस्ते की, वे सब दहाती चीनी थे, अंग्रेज़ी तो क्या समझते, केवल ईशारों की भाषा का साहारा था, समझाया इन मरीज़ों को सम्भालने वाले केवल तुम हो, इनके घर वाले दूर है, इनको ठीक करके घर भेज दो तो आप को ईश्वर धन्यवाद देगा। प्यार की भाषा सब समझते है, सब ने वादा किया

मन लगा कर काम करेंगे।
वार्ड में कचरा फेंकने पर रोक लगाई, साबुन से हाथ धोना, मुँह पर पट्टी बाँध कर काम करो, रोज़ मरीज़ों को स्पंज, हल्का खाना, साफ़ पानी जैसी मूलभूत बातें, वार्ड में अनुशासन का वातावरण आने लगा,

कमांडर ड्यू ने जब देखा डाक्टर रुचि ले कर काम कर रहा है तो उनकी हर जरूरत पूरी करने लगा, पलंग भी बढा दिये, ऐक पलंग पर ऐक मरीज़, हर एक पर मच्छरदानी, मरीज़ों को रण भूमि से लाने को ऐम्बूलेंस स्ट्रेचर, वील चेयर वार्ड में स्प्रे।
जो भी सैनिक अफ़सर आते नये वातावरण को देख कर द्वारका की तारीफ़ करते, मरीज़ों में विश्वास जागा, कुछ तो वापस रण में जाने लगे।
द्वारका समय के बाद भी काम करता था, उसे रात दिन काम करते देख कर सैनिक अफसर भी आश्चर्य करते।
कई बार ७२ घंटे लगातार काम किया।
ऐक बार ८०० सिपाहियों को ऐक दिन में रणभूमि से वार्ड में लाया गया।
सर्जिकल वार्ड तो उसका बम्बई के अस्पताल में रुचि का विषय था, सारी पढ़ाई का अनुभव उसने इस मैदानी अस्पताल में उतार दिया।

कमांडर ड्यू को कहा गया दर्द कम करने की गोली, इंजेक्शन, ओक्सिजन फौरन प्रचुर मात्रा में विदेश से मंगाए, व्दारका ने चीनी शल्य चिकित्सा व दर्द निवारक लेप व घूँटी का अध्ययन रात रात जाग कर किया। कुछ चीन के पेड़ों की जानकारी ली जिनकी पत्तियाँ उबाल कर सेंक करने से दर्द कम होता है। आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों के बूढ़ो से मिला जो टूटी हड्डियों को जोडने और सही बैठाने की विद्या पढ़े हुऐ थे व अनुभव रखते थे। चीनी मनोविज्ञान की जानकारी ली कि प्राणायाम से दर्द कैसे सहन किया जाता है वह पद्धति घायल सैनिकों को सिखाने लगा।

भारत में रक्त दान की व खून की जाँच व ग्रुप की जानकारी आ गई थी, उस विज्ञान की जानकारी से जोखम उठा कर गंम्भीर ज़ख्मी सैनिकों को बचाया। रक्त दान का संदेश जनता में भेजा। घायल सैनिकों के परिवारों को मिलने की सिफ़ारिश की ताकि वे अपने आदमी को रक्त दे सके।

कमांडर ड्यू, माओ व अन्य उच्च स्तर के सैनिक अधिकारी उसके वार्ड को देखने के लालायित रहने लगे। कभी वह वीर शिवाजी की छापामार युद्ध प्रणाली का जिक्र

भी उच्च सैनिक अफ़सरों के बीच कर देता था ताकि वे अपने सैनिकों को बचा सके। ऐसे दो साल में द्वारका नाथ कोटनिस चीन की रक्षा समिति का सलाहकार नियुक्त कर लिया गया। उसका सुझाव था जापान से आपका यद्ध दो साल से चल रहा है, कितने लोग घायल हुए हैं मरे हैं, उतने ही उनके नागरिक भी मरे खपे हैं नतीजा क्या रहा, जापान आप की एक इंच ज़मीन भी नहीं ले सका और न आप उनकी। अगर मेक्रो पोलो पुल पर आपके चार सैनिक उन्होंने मार गिराये तो इस बात को लेकर क्यों दोनों देश जन शक्ति बरबाद कर रहे हैं, उनके दो लाख सैनिक और आप के सत्तर हज़ार सैनिक मर चुके हैं, रोकिये इस नर संहार को, एक बार संधि की बात करनी चाहिये, चीन में अब राजा का ज़माना तो है नहीं जो मूँछ का सवाल ले कर अपनी जिद्द पर अपनी मन मानी कर जनता को युद्ध में झोंकता रहे, यह जन साधारण का देश है उनकी आर्थिक उन्नति होनी चाहिए, हाँलाकि जापान में राजा का अधिपत्य है जहाँ वह अपनी जनता को निजी जागीर समझ कर युद्ध में बरबाद कर रहा है, वह इंग्लैंड की विस्तार वाद नीति पर चल कर, चीन को हथियाना चाह रहा है, लेकिन चीन कायर नहीं है, हमें शान्ति का सुझाव उन्हें अवश्य देना चाहिए।

ड़ा. कोटनिस के उब्दोधन को रक्षा समिति ने बहुत सकारात्मक दृष्टिकोण से विश्लेषण किया। कई नागरिक मानवाधिकार संगठन उभर के सामने आने लगे थे, वे सैनिकों के मरने पर प्रदर्शन भी करने लगे थे। लेकिन यह आलोचना चीन में तो बहुचर्चित हो रही थी लेकिन जापान तक कौन पहुँचाएँ।

डा. कोटनिस के पास अप्रत्याशित संदेश आने लगे कि आप चीनी नागरिक नहीं हो तो जापान को जाकर यह शान्ति प्रस्ताव रख सकते हो। जिस को उन्होंने मान भी लिया था।

डा. कोटनिस को जापानी सैन्य क्षमता के भी समाचार मिलते थे कि वहाँ के घायल सैनिकों को उचित चिकित्सा उपलब्ध नहीं हो रही है। जापान की जनता ने उद्योग व व्यापार का विकास किया है लेकिन जन स्वास्थ व चिकित्सा क्षेत्र में विकास नहीं है, वे राजनीति से परे जाकर जन कल्याण के बारे में चिंता व्यक्त करने लग थे,कई मिड़िया व विदेशी अख़बारों को इंटरव्यू देने भी लगे थे।

जापान के सम्राट हीरोहितो व उनके रक्षा सचिव शोगोन व

सूप्रिम कमांडर हीडेकी तोंजो का सोवियत संघ के द्वारा यह प्रस्ताव माओ को मिला था कि चीन में कार्यरत शान्ति व सेवा के दो विदेशी ड़ाक्टर हैं अगर वे जापान आना चाहें तो उनके सुझाव पर गौर किया जा सकता है।

माओ ने डॉक्टर बूथाने व डाक्टर कोटनिस को पटाया हवाई अड्डे से इन दोनों को जापान भेजा। वहाँ कोटनिस ने निर्भीकतापूर्वक से कहा आप विस्तार वाद से जन शक्ति कमजोर कर रहे हो, आप दिशा बदलें तो एशियाई देशों को संसार के अन्य राष्ट्रों के मुक़ाबले खड़ा कर सकते हैं। आप लड़ाई व हमलों के बजाय चीन से व्यापार बढ़ाने पर विचार करें।

डा. कोटनिस को जापानी सम्राट ने लोभ दिया कि जैसे आप चीन के लिये काम कर रहे हो वैसे ही जापान के लिये काम करो, आप जो शर्तें रखेंगे हम मान लेंगे।
डा. कोटनिस ने कहा अगर घायल सैनिकों की मदद ही करनी है तो मैं इधर भी आ सकता हूँ माओ मुझें रोकेंगे नहीं लेकिन मैं चाहता हूँ कि युद्ध रोके, दोनों-तरफ़ क़ी जनता का नर संहार नहीं होने दे।

जापान के सम्राट ने वादा तो नहीं किया पर सुझाव पर गौर

करने का वादा किया ।
चीन के क्यूईंग राजवंश में १९०६ में सम्राट जैफिंग जो चूंग नाम से मशहूर थे उन के एक राजकुमार ने जन्म लिया, बड़ी धूम धाम से समुचित राज्य में
ख़ुशियाँ मनाई गई। बालक क्योंकि पहली सन्तान थी राजगद्दी का उत्तराधिकारी भी उसको ही बनना था, नाम करण के पवित्र उत्सव पर नाम रखा गया 'राजकुमार पू वी' ।
बालक राजकुमार के दो वर्ष बाद एक पुत्री ने भी जन्म लिया जिसका नाम रखा गया 'पी वीन' लेकिन दादा ने उसे प्यार से ग्यों से ही पुकारा, बाद में वह
'ग्यों क्यूटान' से ही जानी गई ।

शासक चूंग की शिकार खेलते १९११ में मृत्यु हो गई । केवल छः साल की उम्र में राजकुमार पू वी का सम्राट के रूप में राज तिलक हुआ।

विश्व में राज घरानों के प्रति विरोध होने लगे, उनके राज कोष से उठाये जाने वाले निजी खर्च पर प्रजा में आक्रोश व आपत्ति उठने लगी। उनको राज गद्दी से उतारा गया, कई जगह तो उनकी हत्या भी कर दी गई, वे अपनी जान बचाने के लिये जंगलों में जा छिपे। चीन में भी १९१२ में

राज परिवार को राज महलों से निकाल कर दर दर की ठोकरें खाने के लिये सड़कों पर छोड़ दिया गया।

राजकुमारी पी वीन व उनकी माँ महल के किसी विश्वास पात्र नौकर की सहायता से साधारण परिवार का बता कर रहने लगे और पी वीन ने भी साधारण स्कूल में नाम लिखा लिया, अब वह दादा जी के प्यार से पुकारे जाने वाले नाम की ही लड़की रह गई थी, स्कूल में नाम लिखवाया गया ग्यू क्यूनटान। इस लड़की ने १९२६ में मेट्रिक बड़े अच्छे अंकों से पास किया। अब उसको आगे की शिक्षा लेने के लिये के रास्तें नज़र आए, इंजीनियरिंग मेडिकल अध्यापक कई विषय थे जिन में से उसे कोई एक को चुनना था। उसने डाँक्टर बनने की सोची और यूहान शहर के मेडिकल कालेज में नाम लिखा लिया। वह १९३० में डाक्टरी की पढाई़ पूरी कर बाहर आई, और डा. नौरमेन बूंथा के पीस अस्पताल, शीजीआ झूआगं शहर में काम करने चली गई ।

डा. द्वारका नाथ कोटनिस को लड़ाई के मैदान में कड़ी मेहनत व लगन से काम करते दो साल हो गये थे, वहाँ के वातावरण से इन के स्वास्थ्य पर असर पड़ने लगा, इन को कभी कभी सिर में चक्कर आने लगे। ऐक दिन डा. बूथाने अपने स्टाफ़ को लड़ाई के फिल्ड अस्पताल को दिखाने

व कुछ दवाइयों को डा. कोटनिस को देने के लिये आये। ग्यू क्यूनटान भी साथ थी जो हर एक गतिविधि को बड़े गौर से देख रही थी और यह अनुमान लगा रही थी कि इन अभावों की स्थिति में डा. कोटनिस दो साल से कैसे यहाँ काम कर सकें? जब उसे पता चला कि कोटनिस का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं है तो उसने वहाँ रूक कर इनकी मदद करने की इच्छा जतायी। लेकिन सैनिक कानून से कोई महिला छावनी में रह नहीं सकती थी, उसे इजाजत़ नहीं मिल सकती थी, पर इन से गहरी हम दर्दी उसे हो गई, कोटनिस भी इस सहानुभूति के लिये आभार प्रकट करने लगे । डा. बूथाने ने कोटनिस को यूहान आकर कुछ ज़रूरी जाँच कराने पर ज़ोर दिया। वे लोग शाम होने से पहले चले गये।

कमांडर ड्यू से डा. बूथाने ने कोटनिस के विषय में बात करी होगी। ऐक वायर लेस संदेश कोटनिस को मिला "जल्दी यूहान जाकर डाक्टर से मिलो।"
डा. कोटनिस कभी छावनी छोड़ गये ही नहीं थे, जाते भी तो कहाँ?

फिर भी उन्होंने स्टाफ से बात की, उनको काम सौंपा और दो तीन दिनों में लौट आने की उम्मीद जताई ।

वे सैनिक गाड़ी में सवार हो यूहान अस्पताल की तरफ़ चल पडे !
ड़ा. कोटनिस का डॉक्टर ग्यू ने स्वागत किया,
वे दोनों ऐेक ख़ाली कमरे में घुसे, और दो ख़ालीकुर्सियों पर बैठ गये।

ग्यू ने कोटनिस के कपड़ों पर नज़र ड़ाली तो समझ गई कि इससे अच्छे कपड़े उनके पास हो ही कैसे सकते हैं, लेकिन साफ़ धुले थे व पेड़ की पत्तियों के साथ उबालकर कर धूप में सुखे हुऐ थे। दूसरी तरफ़ ग्यू के कपड़े सफ़ेद थे और उन पर आइरन भी की गई थी।

ग्यू ने कोटनिस को कहा जब हम आपके पास आने के लिये रवाना हो रहे थे तो मैंनें सोचा शायद आप पचास साल के हो सकते हो, लेकिन आप जैसे नव जवान को देख कर मुझे बड़ा अचम्भा हुआ। अगर आप बुरा नहीं माने तो बतायें हमारे देश में आप की दिलचस्पी क्यों बनी और वो भी इस चुनौती भरे व कठिन स्थिति में।
आप के चार साथी छः महिने में भारत चले गये, केवल आप रह गये, वो भी इतनी लगन के साथ कर रहे हैं, पूरे चीन में आप की चर्चा है।

कोटनिस ने लघु उत्तर दिया काम वहाँ भी करना है यहाँ भी कर रहा हुं।
ग्यू ने कहा मैंनें भारत के महानऋषियों व पुरुषों के बारे में पढ़ा है, और ऐक आपसे मिल रही हुँ, मुझे फ़र्क़ ही नहीं लग रहा है।

कोटनिस ने गर्दन झुका ली, कुछ नहीं बोले।

चाय आ गई थी... दोनों ने चुपचाप पी.. केवल बीच बीच में एक दूसरे की तरफ देख कर मुस्करा जरूर लेते थे। कोटनिस ने शर्माते अंदाज में ग्यू से पूछा आपके यहाँ जो महिलाऐं इलाज के लिये आती हैं उनको आप ही सम्भालती है । उनकी सामान्य सेहत कैसी होती है।
ग्यू ने कहा बड़ी खराब
कोटनिस ने कहा मेरे पास भी जो सैनिक घायल होकर आते हैं वे ज्यादा
तन्दुरुस्त नहीं होते। उपर से लड़ाई का बोझ।
ग्यू ने कहा पर किया क्या जा सकता है सिवा फिकर करने के। यहाँ तो पडोसी देशों से लडाई झगड़ों से फुर्सत नहीं। उपर से प्रकृति के प्रकोप.।
चलो आप इतनी सोचती तो हैं। ग्यू बोली मेरा तो देश है पर आप हमारे बारे मे इतना सोचते हैमुझें पहले व्यङ्गिग्तल

मिले हो।
कोटनिस ने भी कहा आप क्या कम हो इस छोटी सी उमर में इतने गहरे
विचार मुझें भी भ्रमित कर रहे है। आपके माता पिता ने अच्छें संस्कार डाले हैं। ग्यू ने कहा पिता तो बचपन में भगवान को प्यारे हो गये माँ मेरा बहुत ध्यान रखती है। कहती है मनुष्य जीवन बार बार नहीं मिलता जहाँ तक हो सके अच्छा करो अच्छे बनो। मेरी माँ मुझें बहुत अच्छी लगती है। बाहर किसी के कदमों की आहट हुई। दोनों दरवाजे की तरफ देखने लगे।

ड़ा बूथने थे कहने लगे देर से आने के लिये क्षमा। ग्यू कोटनिस से मिली हो इन्हें बोर तो नहीं होने दिया । कोटनिस ने कहा नहीं यह तो बहुत समझदार है मैनें तो इस से काफी सीखा है। ड़ा बूथने कहा मैंनें सुना है आप आराम ही नहीं करते खुद बिमार हो जाओगे तो सब को परेशानी हो जायेगी।

ग्यू की तरफ देखा बोले इनको लिटाओ मैं देखूँगा। वे कोटनिस से पुछने लगे खाना चाय विस्की टाईम पर लेते हो । जबाब था विस्की मैं पीता नहीं. ड़ा ने चौंक कर कहा क्या सवाल था और खाने में फिर जबाब था साधारण जो

मिल जाता है
ओ के
ड़ा बूथाने का अगला सवाल था फिल्ड के मैस में अंडें मुर्गी मटन बड़ा टेस्टी होता है खूब दबा कर खाते हो क्या फिर छोटा सा जबाब था सर मैं शाकाहारी हुँ ड़ा बूथने को जैसे बिजली का झटका लगा बोले वाट आर यू जोकिंग कॉंन्ट बिलीव ड़ा कोटनिस बैठे हो जाये आप अभी तक जिन्दा कैसे हो क्यों मजाक कर रहे हो मेरे साथ।

ड़ा कोटनिस ने कहा सर सच कह रहा हुँ हम ब्राह्मण है हम ये सब छू ते भी नहीं हैं। ड़ा बूथने ने ग्यू से कहा इन को पास वाले कमरे में ले जाओ
मुझें कुछ देर के लिये अकेला छोड़ दो मेरा दिमाग सुन हो गया है लग रहा है मैं किसी पत्थर को देख रहा था जैसे क्राईस्ट को छूआ था। दो साल से ये इन्सान जिन्दा कैसे रहा उन लाशों के बीच में। तुम इन्हें पासवाले कमरे में ले जाओ और मुझें अकेला छोड़ दो। ग्यू और कोटनिस बाहर निकल जाते हैं ।
ड़ा बूथने ने कमान्डर डयू से मिलने का समय माँगा। चार बजे दोनों मिलते हैं। सर मैं ड़ा कोटनिस के बारे में कुछ बातें आपकी निगाह में ड़ालना चाहता हूँ मेरा फर्ज है। यह विदेशी है आप को इस के देश को जबाब देना भारी पड़

सकता है। आप इसे फिल्ड़ से फौरन वापस बुला ले। जैसा उसका खाना पिना काम करने का तरीका है वो सब गलत है यह मानसिक मरिज बन जायगा।

कमान्डर डयू ने कहा आप की सोच गलत नहीं है। देश की रक्षा समीति का हर सदस्य ड़ाक्टर कोटनिस के काम को सराहा रहा है मैं भी उसका प्रसंशक

हुँ। आप ड़ाक्टर ग्यू से कहें वो उससे बात करे अगर कोटनिस हिन्दुस्तान जाना चाहता है तो मैं इन्तजाम करता हुँ। फिलहाल आप उसे एक हफ्ते इधर रोको। ड़ा बूथने ने कहा आप जैसे कहे मैं आपका आर्डर उसे सुना देता हूँ।

ड़ा कोटनिस ड़ा बूथने के सामने बैठे थे। ग्यू हड़बड़ाती अंदर आती है और कहती है आप दोनों मेरे साथ चलो। यहाँ से पाँच मील दूर खनिज मजदूरों की बस्ती है वहाँ रात में बीस आदमी औरतें तेज बुखार चढ़ने से एक घंटे में मर गये। ड़ा बूथने बोले ये लोग कच्ची शराब पीते है उपर से सडी मछली की बिरयानी खाते हैं मरेंगे ही। पर हमें चल कर देखना जरूर चाहिये। तुम पुलिस को भी खबर कर दो।

तीनों चल पडे।

सारी बस्ती में रोना पिटना हो रहा था। उन मजदूरों की झोंपडियों के सामने भीड़ थी उन के पहुँचते ही लोगों ने

जगह बनाई। इन्होंने यह तो अंदाज लगा लिया था कि वे लोग म्ए चके हैं फौरन पुलिस को बोले लाशें बाहर निकालो।

ड़ाक्टरों ने लाशों को देखा वे काली पड़ चुकी थी उनके नाक से काला खून बहा होगा। ये बोले लाशों को गाड़ दो। पास में बह रही पीली नदी में मत बहाओ। ड़ा कोटनिस बोले मुझें खून की जाँच करना आता है इनके नाक से बहे काला खून को किसी कागज की पुडिया में लेकर मुझें दे दो। ये लोग वहाँ से आ गये।

ड़ा कोटनिस अस्पताल के पीछें एक कोने में धीमी आग जला कर साथ में लाये खून के नमूने को गर्म पानी में उबालते है तो यह तो समझ गये कि मरने वाले की मौत खून की खराबी से हुई है शराब से नहीं। वे अपनी राय ड़ा बूथाने को दे देते हैं। जो बिना समय बरबाद किये माओ को दे देते हैं।

अगली सुबह

ड़ा बूथाने कुछ जल्दी उठ गये थे।

वे अस्पताल के आगे लगाये छोटे से बगीचे में पानी दिया करते हैं और चहल कदमी भी कर लिया करते थे आज

भी उसी आदत के मताबिक वहाँ गये पर जा कर एक बैंच पर बैठ गये और किसी गहरे विचार में डूब गये।

ड़ा कोटनिस का भी मन हुआ तो वे भी बगीचे की तरफ आ पहुँचें।

ड़ा बूथाने को गुड़ मार्निंग कह कर उनके पास ही बैठ गये।

ड़ा बूथाने ने कहा क्या आप भी वही सोच रहे हो जो मैं सोच रहा हुँ।

ड़ा कोटनिस ने कहा जब दो यात्री एक ही नाव में सवार हों तो उनकी मंजिल भी एक ही होती है।

ड़ा बूथाने ने कहा हाँ सही कहते हो। हम बिमार को ठीक कर सकते हैं लेकिन इन महामारियों को नहीं रोक सकते। इस के पहले कि कोई मेरे पर उंगली उठाये मैं तो यहाँ से चला जाउँगा या आत्महत्या कर लूँगा।

ड़ा कोटनिस ने कहा हर समस्या का हल है। हम अपना काम करते रहे। फल देना ईश्वर का काम है।

ड़ा ग्यू भी सामने आती दिखाई दी उसके हाथ में अखबार था।

दोनों ड़ाक्टरों को गुड़ मार्निग कर के बोली देखो हाँगकाँग से निकलने वाले अखबार ने चीन में मरने वाले की संख्या चार सौ लिखी है। हमारे पर भी इस की जिम्मेदारी डाली है।

ड़ा कोटनिस बोले वे गलत नहीं हैं पर किसी पर व्यक्तिगत टिप्पणी नहीं की। हमें लीग आफ नेशन से मदद लेनी चाहिये। ये बिमारियाँ अफ्रीका में आती ही रहती हैं।

वे तीनों बात कर ही रहे थे कि मोटर साइकल पर एक सैनिक आकर पोर्च में रूका।

ड़ा बूथाने को सलाम कर के एक कागज उन्हें देकर वापास चला गया।

ड़ा बूथाने ने संदेश पढ़ कर कहा सुप्रीमो माओ जेडोग का बडा लड़का कमांडर माओ एनिग दो बजे हमारे अस्पताल

में आयेंगें।

ठीक दो बजे तीन जीपें साइरन बजाती अस्पताल की बाउंड्री में घुसी एक चुस्त नवजवान अफसर नीचे उतरा ड़ा बूथाने ने आगे बढ़ कर हलो कहा और आगे बढ़ कर हाथ मिलाया। पिछे खड़े ड़ा कोटनिस व ग्यू से परिचय कराया।

ड़ा कोटनिस को देखकर बोले मैं मिल चुका हुँ फील्ड़ पर।

सब अंदर गये। पहले कमरे में दो ही घुसे। बाद में ड़ा कोटनिस को बुलाया।

कमांडर एनिग ने कहा जो हो रहा है उसे रोको। शेना की मदद चाहिये तो बोलो।

ड़ा बूथाने ने कोटनिस की तरफ देखा। ये बोले जो मर रहे हैं उनको गाड़ें नहीं इस से बिमारी फैलेगी शवों को जलाये। भीड़ से लोगों को रोको। टीकाकरण करना जरूरी है पर

दवा है ही नहीं।

एनिग ने कहा युद्ध रूका है आप यही रहे ड़ा बूथाने का हाथ बँटायें।

कह कर उठ गये। बाहर ग्यू खड़ी थी उसके पास रूके बोले हाँ तो राजकुमारी साहिबा आप कैसी हो। मेरे बारे में तो आपकी माँ ने कह दिया अभी पढ़ रही है अब मेरे छोटे भाई के बारे में मन हो तो मेरी माँ को आपकी माता जी के पास भिजवाँऊ। ग्यू के गाल शर्म से गुलाबी हो गये।

ड़ा कोटनिस और ग्यू वहीं रूक गये।

ड़ा कोटनिस ग्यू से बोले आप को वह सैनिक अफसर आते और जाते राजकुमारी क्यों बोल रहा था मजाक कर रहा था या.......

ग्यू जाने दो जो कहता है तो कहता रहे।

ड़ा कोटनिस इस के पिछे कोई बात है जो आप कहना नहीं चाहती हैं ग्यू हाँ बात तो है पर वह अतीत है उस को

लेकर तो बैठे कब तक रहे फिर अपने हाथ में कुछ है भी नहीं। मनुष्य को वर्तमान में जीना चाहिये।

ड़ा कोटनिस ने कहा चलो कहानी ही सही आप का अतीत सुनाओ।

ग्यू ने कहा मेरा अतीत बड़ा दुखदाई है मैं उसे याद करके खुद भी दुखी नहीं होना चाहती हुँ और न यह चाहती हुँ कि कोई मेरे पर तरस खाये।

ड़ा कोटनिस बोले भविष्य तो हमेशा धुँधला होता है इसके बारे में तो मनुष्य कुछ कह ही नहीं सकता। चलो वर्तामान सही इसी पर कुछ चर्चा करे।

आप कहाँ रहती हो घर में कौन कौन है।

रयू मैं और मेरी माँ यहाँ से दो मील दूर ही एक मकान ले रखा है।

ड़ा कोटनिस चलो कभी चाय पीने आयेंगे।

ग्यू ने कहा हाँ हाँ क्यों नहीं मेरी माँ भी आपसे मिलना चाहती है वह भारत के बारे में बहुत जानती है। भगवान बुद्ध भी तो आपके देश के थे।

ड़ा कोटनिस ने कहा वे मुझ क्यों पहचानेगी भला। आपसे तो मुलाकात हुए दो दिन भी न हुए और आप कह रही हैं वे मेरे से मिलना चाहती हैं उनको मेरे बारे में कैसे पता

ग्यू ने कहा मैनें ही बताया है उन्हें और वे आपको जल्दी ही बुलाना चाहती हैं। कहो तो आज ही चलो क्योंकि आप कब फील्ड़ पर चले जाये कुछ पता नहीं।

ड़ा कोटनिस ने कहा मुझें तो कोई एतराज नहीं है पर ड़ा बूथाने से पूछे बिना कैसे चल सकते हैं।

ग्यू ने कहा अगर वे जग रहे हो तो मैं पूछू उनसे एक घंटे में आ सकते हैं।

वह मुडी और बाहर निकल गई।

थोड़ी देर में वापस आई और कहने लगी दो घंटों की इजाजत दी है चलो मैं वैसे साइकल पर ही आती जाती हुँ लेकिन पैदल भी चले तो एक घंटा जाने आने का और एक घंटा बातचित का व चाय पानी का।

ड़ा कोटनिस को उस पर हँसी आ गई बोले अगर रास्ते में बरसात हो गई तो।

ग्यू बोली तो चलो दोनों साइकल से चलते हैं आप चला लेना मैं पीछे बैठ जाउँगी।

ड़ा कोटनिस बोले अगर गिर गये और चोट लग गई तो माँ की मार कौन खायेगा।

ग्यू ने कहा अब चल पड़ो जो होगा अच्छा ही होगा।

दोनों घर पर पन्द्राह मिनिट में पहुँच गये। माँ ने दरवाजा खोला कहा आओ मेरे बच्चों।

ड़ा कोटनिस पाँव छूने को झुका तो माँ ने कहा हाँ आपके रिवाज है छू लो लेकिन मैं तो तुम्हें चूमूँगी और गले भी लगाउँगी ँ। कहते कहते उस के आँसू झलक आये। ड़ा कोटनिस भी अपनी माँ से दो साल से दूर था शायद उसी की याद आई हो इसकी भी आँखें भर आई। ग्यू ने जब दोनों को गले लगते देखा तो वह भी उन से जुड़ गई। किसी ने सिस्कियाँ भी भरी पर कोई न जान पाया कि उन तीनों में कौन था।

वे तीनों यों ही मूर्तिवद खड़े रहे कब तक यह भी कोई न जनपाया।

ड़ा कोटनिस ने कहा माँ मैं चलता हुँ। रास्ता लम्बा है देर हो रही है कह कर वह जान के लिये मुड़ा तो ग्यू ने कहा ऐसे कैसे चाय पीये वगैर। ग्यू की माँ ने कहा चाय का मन नहीं है तो रहने दो लेकिन कहा ठहरो और वह अंदर गई और मुठठी में कुछ लाई और ड़ा कोटनिस पर तीन बार घूमाया और पाँव के निचे जमींन पर गिरा कर पाँव से

कुचल दिया। और कहाँ अब जा। ग्यू का चेहरा शर्म से लाल हो गया।

ड़ा कोटनिस समय से अस्पताल आ गये। ड़ा बूथाने बरामदे में बैठे मिले।

बोले जापान ने युद्ध विराम इस महिने के अंत तक बढ़ाने का प्रस्ताव रखा है जिसे रक्षा समिति ने स्वीकार कर लिया है। अब आपको यहाँ ही रहना है।

ड़ा कोटनिस ने कहा यह तो बहुत ही अच्छी खबर है। हमारे सामने एक जटिल समस्या है देश की जनसंख्या और देश का फैलाव। हम हर जगह नहीं पहुँच सकते। हमें काम करने वाले लोग बढ़ाने पड़ेगें जो साधारण मेड़िकल ज्ञान से लोगों में जाकर इस महामारी का सामना कर सके। हम नागरिकों के साथ सैनिकों का भी उपयोग कर सकते है।

ड़ा बूथाने ने कहा लोगों को तो जोड़ लेगें हकूमत भी साथ देंगी लेकिन दवाईयाँ है ही नहीं। केवल झाड़ फूँक से बिमारी को ठीक करोगें क्या ? दूसरी बात यह एक महामारी

का रूप है मरने वाला २४ घंटें भी नहीं देता ड़ाक्टर को कि वह किसी बिमारी का निर्धारण करे और उस का उपचार करें यहाँ तो आप देख रहे है मरे बाद खबर आती है कि इस बस्ती के इतने आदमी औरतें मरे पाये गये। इन बातों का इलाज क्या हो सकता है। लगता है मुँह छुपाना पडेगा और हो सकता है हम खुद भी इसी बिमारी से मर जायें।

ड़ा कोटनिस ने कहा आप का कहना सही है। मृत्यु किसी में भेद भाव क्यों करेंगी लेकिन इसका यह अर्थ भी नहीं है कि भयभीत ही होते रहे और हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें। हमें आशा का दामन नहीं छोड़ना चाहिये।
ड़ा कोटनिस ने कहा मुझें आपकी लाईब्रेरी से कुछ जानकारी लेनी है कृपया उस कमरे की चाबी मुझे दे।

लाईब्रेरि में अथिकाँशं वे किताबें थी जो ड़ा बूथाने ने अपने विद्यार्थी काल में पढ़ी थी लेकिन इनकी निगाह एक फटी किताब पर गई जो पिछले २०० साल में आई बिमारियों व उनके उपचार के बारे में थी। वे चीनी भाषा नहीं जानते थे पर उसमें कुछ पेड़ों व पत्तीयों की तस्वीरें थी जो वे समझना चाहते थे इसलिये उस किताब को निकाल कर अलग रख ली। उनकी किताबों की जाँच

जारी रही कुछ अलमारी पर भी पड़ी थी उन्होंने स्टूल लगा कर उनको नीचें गिराया तो उनकी निगाह एक मोटी सुनेहरी अक्षरों में लिखी किताब पर गई उसे खोल कर देखा तो उस में तेल चित्र ही थे जो चीनी राजाओं रानियों से भरी पड़ी थी वे पन्नें पलटे रहे कि उनकी निगाहें एक महिला पर जम गई वह महिला उनको जानी पहचानी सी लगी पर याददास्त पर जोर देने पर भी कुछ याद न आ रहा था। वे बाहर आ गये।

दूसरे दिन उनको व ड़ा बूथाने को उच्चम अधिकारियों ने बुलाया उन के सामने ही रहना पड़ा। ड़ा बूथाने को यह बात याद नहीं आ रही थी कि कब उन्होंने ऐसे बयान दिये कि देश में फैल रही बिमारी का कारण चिड़ियाँ गौर्रियाँ चूहे हैं क्योंकि देश भर के गावों में लोग ढ़ोल बजा कर चिड़ियाँ गौर्रियाँ को पेड़ों पर बैठने ही नहीं देते और जब वो थक कर मर जाती हैं और जमींन पर गिर जाती हैं तो लोग खुशियाँ मनाते हैं फिर उनको खाते हैं इसी से यह बिमारी फैल रही है।

अगला आरोप था कि आपने टिड़ड़ी दल को रोकने के लिये खेतों में आग लगाने के लिये कहा इससे फसले नष्ट हो गई और लोग मरी टिडिडयाँ को उबाल कर खा रहे है

इससे बिमारी फैल रही है।

जो आखिरी आरोप था कि आपने इस काले बुखार को रोकने के लिये एक जिन्दा आदमी पर प्रयोग किया और उसे जापान की मदद से अमेरिका ने चीन से चुरा कर ले गये हैं और वे इस बिमारी का टीका बना कर बेचेंगें और चीन से यह बिमारी नहीं जायेगी और व्यापार भी हाथ से गया।
ड़ाक्टर बूथने वैसे भी कई दिनों से निराशाजनक बातें कर रहे थे इन आरोपों को सुनके और भी विचलित हो गये वे मिटिंग हॉंल से जो चोथें माले पर था बाहर निकले और बरामदे से छलाँग लगा कर नींचें कूद जाते हैं और अपने प्राण त्याग देते है।

राष्ट्रिय सलाहकार समिति स्थगित हो जाती है और हर व्यक्ति की आँखों आँखो में एक ही प्रश्न था कि जो आरोप हम ड़ा बूथाने पर थोपे जा रहे थे क्या दरअसल में उन्होंने बोले भी थे या नहीं या एक विदेशी जो चीन का हितैषी बन कर रहा उसे पहचाना ही नहीं और इनकी जगह अब कौन लेगा।

वायरलेस संदेश भेजे जा रहा था।

हर जिले से मौत की खबरें।
लेकिन काले बुखार से लड़ने की इच्छा शक्ति भी जनता में बढ़ती जा रही थी।
हर जिला हर कस्बा हर गाँव हर आदमी औरत इस भयंकर आपदा से झुंझने को तैयार हो गया था।
सेवा समितियाँ रेड़ क्रॉस सेना के कैम्पस सब माँग कर रहे थे दवाईयाँ भेजों।
लेकिन दवाइयाँ थी ही नहीं।
टीका करण करने को स्वंमसेवकों को ट्रेनिंग दी जा चुकि थी।
लेकिन टीके थे ही नहीं।
समस्याऐं सामने खड़ी है।
पर समाधान है ही नहीं।
सब सरकारी तंत्र को योजनाओं के चक्रव्यूह में तो धकेल दिया।
पर इस से निकलने का रास्ता उसके हाथ में नहीं।
फैक्ट्रीयाँ कल कारखानें दिन रात माल बना रहे हैं। रूकें भी नहीं।
पर टीका।
रोक थाम का टीका।
लोग मौत के मुँह में जायें ही नहीं।
वह टीका जब बना ही नहीं
तो जनता में लगेगा कैसें ।

ड़ा कोटनिस को याद आ रहा था ड़ा बूथाने का बिल्ड़िग से कूदना।
उन की मृत्यु पर किसी ने अफसोस भी नहीं हुआ ऑसू तो बहाना दूर।

क्या ड़ा बूथाने कायर थे या मनोविज्ञान से पीडित थे उनकी मृत्यु सार्थक थी या मात्र एक दुर्घटना।
ये हजारों प्रश्न उनके मन मस्तिष्क पर सांप की कुंड़ली मार कर छा गये।
उनको याद आने लगे :
अपने पिता के शब्द जा द्वारका जा पीठ मत दिखाना सीने पर गोली खाना
श्री राम का रावण से युद्ध जब वे रावण रथ पर था और राम अरथी।
श्री कृष्ण का महाबली कंस से युद्ध।
वीर शिवाजी के हाथों अफज़ल का वध।
ड़ाक्टर कोटनिस की तंद्रा टूट गई। उनके निराश मन ने हुंकार भरी चेतना जागी। क्या असफलता के आगे आत्म हत्या आत्म समर्पण।
नहीं कदाचित नहीं।
वे अचेत हो गये उनके मुँह से झॉग निकलने लगे और शरीर काँपने लगा।
ग्यू ने इन की यह स्थिति देखी तो ड़र गई।
सर्व प्रथम जब उसे ड़ा बूथाने ने कहा कि फील्ड़ से उनके पास गुप्त सूचना आई है कि एक हिन्दूस्तानी ड़ाक्टर जो फील्ड़ पर घायल चीनी सैनिकों का उपचार कर रहा है वह मिर्गी जैसी बिमारी से पिड़ित है तो आप फौरन जा कर जाँच करो और वे उस काम से रवाना हुऐ तो मैंनें भी फील्ड़ देखने की इच्छा जाहिर की।
हाँलाकि अखबारों में इस बहादुर ड़ाक्टर की बड़ी चर्चा थी कि इसके चार साथी तो ड़र के दो महिनें में ही वापस चले गये। केवल यही दो साल टिक पाया है और 72 घंटे काम करता है 800 घायल सैनिकों को अकेला सम्भालता है।

चोरी छुपे दुश्मन के घायल सैनिको की भी जान बचाई है। जापान का राजा भी इससे मिलना चाहता है और वीरता पदक देना चाहता है तो इस को देखने की मेरी इच्छा और भी प्रबल हो गई और मैंनें बूथाने से कहा एक महिला को सैनिक छावनी में घूसने की परमिट ले जो मुझें मिल गई। ग्यू ने अपनी डायरी में लिखा था फील्ड़ पर रवाना होने से पहले मैंनें सोचा था कि क्यों मैं मेरा समय बरबाद करने इतनी दूर धूल फाँकने जाने का मन बना रही हुँ जब कि मैं जानती हुँ कि वह किस्मत का मारा एक पचास साल का जिंदगी से बेजार मामूली सा ड़ाक्टर होना चाहिये और यहाँ आकर अपनी बेरोजगारी को छिपाने के लिये कुछ घायल सैनिकों की पट्टी सट्टी कर लेता होगा।

लेकिन फील्ड़ पर ड़ा कोटनिस से मिली तो मैं मेरी कल्पना पर तरस खाने लगी। सब अनुमान गलत निकले।

30 का खूब सूरत जवान मृदु भाषी साहसी निड़र मेहनती ज्ञानी ड़ाक्टर था ।
उसके व्यवहार में छिपा मानव प्रेम मात्र दिखावा नहीं था। उसने अपनी आखिरी कोशिश तक कटे हुऐ घायल सैनिक को बचाने का प्रयत्न किया और उसके कार्यकाल में किसी घायल को जहर दे कर या गल दबा कर नहीं मारा गया। मैंनें भगवान बुद्ध की करूणा मयी छवी को तो देखा ही है पर जिवित दयामयी मूर्ति का साक्षातकार ड़ा कोटनिस से मिल कर हुआ।

मैंनें यह मूक प्रार्थना की ये शीघ्र स्वस्थ हो जाये या इन की बिमारी मुझ को लग जायें।

मैंनें लौटते वक्त ड़ा बूथाने से इन की बिमारी के बारे में बात की थी वे कहने लगे अधिक सोचने से दिमाग थक जाता है और उपर से काम वासना का अभाव पुरूष में मंथन करता है तो मुँह से झॉग निकलने लगते हैं।

ग्यू को द्वारका पर बहुत प्यार आ रहा था। हम चीनी हैं पर फिकर इस हिन्दुस्तानी को है। उसने उनको सहारा दे कर बिस्तर पर लेटा दिया।

जब थोड़ी देर बाद उन्होंने ने ऑखें खोली तो बोले ग्यू मुझें माँ के पास ले चल।

ग्यू ने जीप में बिठा कर अपने घर ले आती है।

जीप से उतार कर सहारा दे कर अंदर लाकर बिस्तर पर लिटा देती है।

माँ तो घबरा जाती है इनका हाथ पकड़ कर जमींन पर बैठ जाती है।

थोड़ी देर बाद ये भी बिस्तर कर उतर कर माँ की गोद में सिर रख कर हल्की हल्की सिस्की लेकर कहते है माँ मुझें आशिर्वाद दे मैं मेरे काम में सफल हो जाऊं।
माँ ने उसे उठा कर अपने सीने से लगा लिया।
बोली भगवान तेरे साथ है तु जो करेगा अच्छा ही करेगा।
तू मेरी बेटी का सुहाग है। तू सूरज की तरह चमक।

उन तीनों में कोई और बात नहीं हुई।

ग्यू द्वारका को लेकर वापस अस्पताल आ गई।

हल्की चाँदनी खिड़की से कमरे में आ रही थी। ग्यू ने अपने बाल खोले और पास में लेटे द्वारका के चेहरे पर ढ़क दिये और दोनों अन्नंत में खो गये।

ग्यू ने कहा मुझें भी साथ ले चलो जहाँ भी जा रहे हो।

द्वारका ने कहा हाँ हम साथ ही रहेंगे

ग्यू ने कहा तो पहले मुझें तो बताना चाहिये था न ।
सीधे माँ के पास चले गये। वो कितनी ड़री होगी।
खैर बताओ क्या बात है।

द्वारका ने कहा बात है भी और नहीं भी। तेरे बिना कुछ भी नहीं कर सकता।
देख हमारी मदद को कोई नहीं आयेंगा क्योंकि कोई भी कुछ जानता ही नहीं है। यहाँ तक कि मैं भी नहीं और तू भी नहीं।

ग्यू ने कहा आपकी बातें मुझें ड़रा रही हैं और मैं ही नहीं हमारे बीच जो नन्हीं सी जान आना चाहती है वह भी।
द्वारका उठ बैठा और ग्यू को गहरे आलिंगन में कस लिया और चुम्मनों की झाड़ी लगा दी। ग्यू ने कहा अभी तो मेरा ख्याल है इतना खुश मत होवो।

द्वारका बोला बस खुश ही अरे आसमान के तारें तोड़ लाऊँगा।

ग्यू हाँ हाँ तोड़ लाना। पहले बताओ क्या सोच रहे थे।

द्वारका ने कहा इस प्रश्न का उत्तर तुम से पूछता हुँ कि अगर कोई पानी में डूब रहा हो और तुम किनारे खड़े देख रहे हो तो उसे बचाने की कोशिश करोगें या उसे डूबते हुऐ देखते रहोगें।

ग्यू ने कहा ये फैसले पहले सोचे नहीं जाते। उस वक्त जो घट में होगा वही उसे आज्ञा देंगा और वह खतरा मोल ले लेगा।

द्वारका ने कहा सही जबाब है मेरे घट में तुम हो तुम आज्ञा देना मैं वैसा ही करूँगा।

देखो ग्यू इस महामारी को रोकना जरूरी है और वह रूकेगी टीके से।
महामारी कह कर नहीं आती और उसका उठाव किस कारण हुआ कोई कह नहीं सकता लिहाजा इलाज है ही नहीं। अब कोई इस की रोक थाम करे तो यह रूके।

ग्यू ने कहा अब मेरी समझ में आया यह द्वारकानाथ कोटनिस कल क्यू परेशान था भावुक था। चलो अंदर घट का स्वामी खुद पानी में कूदेगा ।
अभी मीठा मीठा प्यार करते हैं ।

सुबह दोनों एक साथ उठे।
सूरज निकल आया था।

द्वारका ने कहा मेरे पास बैठो और मेरी बात ठंड़े दिमाग से सुनो।

ग्यू उसके बिल्कुल सट कर बैढ़ गई इतनी की एक दूसरे की दिल की धड़कन भी सुनी जा सकती थी। वह बोला तुम जीप ले जाओ और आस पास के गाँवों में जाओ और इस महामारी से ताजा मरे हुऐ आदमी या औरत के नाक से निकला खून एक इनजेक्शन में भर लाओ। सम्भालना अपने से दूर रखना तुम्हारे शरीर से काफी दूर रखना।

ग्यू उससे दो मिटर दूर उछल कर ऐसी खड़ी हो गई जैसे कोई बिजली का करंट लगा हो और बोली शट अप यू फूल
ब्लै्ड़ी रासकल किलर

द्वारका- मैं जानता था तुम सुन नहीं सकोगी पर पूछों क्यों

ग्यू ने कहा मैं जानती थी तुम मनोविज्ञान के खूंखार भेड़िये हो मुझें ऐसे ही मारोंगे नाटक बाज़ ढ़ोंगी खूनी दरिंदे। तुम ने तीन का कत्ल किया है मेरा मेरी माँ का और मेरे आने वाले बच्चे का।

द्वारका बोला तेरा कसूर नहीं तू बहुत प्यार करती है मुझ से जानता हुँ।
आ मेरे पास बैठ मेरा इरादा समझ ।
तू जो मरते या मरे आदमी का सड़ा खून लायेगी

वह मैं मेरे शरीर में ड़ालूँगा जिससे वे किटाणु मेरे पूरी बोड़ी में फैल जायें। फिर मैं तेरे को लिखाऊंगा कि कैसे मर रहा हुँ।

ग्यू जिस रफ्तार से उससे अलग हुई थी उससे दस गुना तेजी से लपक कर द्वारका से लिपट गई और मेरा प्यार मेरा प्यार कहती उसे काट के खा जाना चाहती थी।
ऑसूओं की नदियाँ बह निकली सिसकियों का तो तार बंध गया।
ग्यू में नई चेतना व स्फूर्ति का संचार हो गया। निराशा और भय के काले बादल जा चुके थे। वह अपने आप को नव क्रांति का हिस्सा समझने लगी थी।
बीस मील के फासले पर एक बस्ती थी जहाँ से रोने की आवाजे आ रही थी
वह जीप को उधर मोड़ देती है।
असमंजस में पड़ जाती है। कहीं द्वारका बिमारी से नहीं निकल पाया उसकी बोली बंद हो गई मुर्छा आ गई तो मैं क्या कर सकूंगीं मरते हुऐ का खून लेते बस्ती के लोग देखेंगे पूछेंगें क्यों ।
जानती हुँ द्वारका आत्म हत्या कर रहा हैं और मैं इसका साथ दे रही हुँ।
उसका सिर चक्कर खाने लगा।
जीप के रूकते ही झोंपड़ियों से लोग निकले और इसे घेर लिया।
बच्चें शोर मचाने लगे ताली पिटने लगे। हमें बचाने वाली ड़ाक्टर आ गई।
अब हम मरेंगे नहीं।
ग्यू की हिम्मत लौट आई। लोंगो के चेहरे देख कर विश्वास

आ गया कि लोगों को कितना भरोसा है ड़ाक्टर पर जैसे भगवान है वह इस धरती पर।
उसने निष्चय कर लिया मुझें द्वारका का कहना मानना चाहिये। अगर वह सफल होता है तो लोगो की मुस्कान बनी रहेंगी। और वह उस झोंपड़ी में घुस जाती है जहाँ मजदूर दम तोड़ रहा था।
नमूनें लेती है। मृत के परिवार को ढ़ाढ़स देकर बाहर निकल आती है।

द्वारका उसकी बाट जोह रहा था। उसके चेहरे को देख कर ग्यू को लगा सम्पूर्ण शान्ति का पूंज हो।
उसका सारा शरीर संतोष से दिप्तमान हो रहा था। तनाव कुंठा का चिन्ह ही नहीं था।
उसने कहा दवाईयों के स्टोर के बाहर बिस्तर लगा लिया है तू दवा पिलाने इंजेक्शन लगाने मुझें हिलाने डुलाने में मेरी बेहोशी को दूर करने में देर मत करना।
डॉ कोटनिस शान्ति से लेट गये।
ग्यू से बोले नमूने का खून मेरे हाथ में ड़ाल।
ग्यू का हाथ काँप रहा था ऑसू बह निकले।
द्वारका ने उसे अपनी तरफ खिंचा और गहरा चुम्मन उसके ललाट पर लिया और कहा माई ब्रेव स्वीट हार्ट।

और सड़े खून की पिचकारी ड़ा द्वारका नाथ कोटनिस में शरीर में प्रवेश कर गई।
दो मिनिट बाद वे ग्यू से बोले
पसीना आ रहा है प्यास लग रही है पानी
पाँच मिनिट बाद
सिर दर्द शुरू हुआ है हल्का चक्कर आ रहा है गला सूख

रहा है । पानी ।
बुखार नाप 102 हो तो एन्टीबायोटीक दे जिसमें कुनैन हो दो गोली एक साथ।
दस मिनिट बाद
सांस लेने में तकलीफ हो रही है
हल्का हल्का सीना दबा

एक घंटे बाद
मेरा पिशाब ट्रे में ले । देख गहरे लाल रंग का होगा यानि अंदरूनी खून का रिसाव शुरू हुआ है।
टिशुज का टुटने से रोक निरोसीस हो रहा है । मेटाड़ेटा दे।
पेन्सिलीन के इन्जेक्शन हर दो घंटे में दे।
तीन घंटे बाद
उल्टी होने को है । शायद खून की होनी चाहिये । इक्कठा हुआ खून निकलेगा। घबराना नहीं।
निकले उतना निकलने देना। ड़रना मत। एक्सीफ मेटाड़ेटा दे।

पाँच घंटे बाद
खाल पर छाले नज़र आये तो समझों लिम्फो नोड़स टुट रहे हैं
फौरन जेन्टोमिसिन दे।

दस घंटे बाद
सांस लेने में भयंकर जोर लगाना पड़ रहा है लगता है फैफड़े चिपकने लगे हैं। हवा कर
हवा ड़ाल हवा तेरे मुँह से हवा ड़ाल पंखा कर हवा साइकल के पम्प हवा ड़ाल मेरा सीना दबा हथैलियों से

हवा के वगैर दिमाग काम करना बंद कर रहा है हवा हवा हवा
ग्यू ने देखा द्वारका बेहोश हो रहा है उसे उल्टा लिटा कर उसकी पीठ पर हाथ से दबाने लगी
उसे होश आने लगा
बोला निमोनियें की हालत हो रही है। टेट्रामाइसिन 30 सी सी ड़ाल फौरन
 बाम लगा गर्म पानी की थैली दे।
ग्यू ने पूछा कुछ आराम मिला।
उसने ऑखों से कहा हाँ

पंद्रह घंटे बाद
बोला नाक से काला खून बह कर बाहर आयेगा। पूछें जाओ। नाक में जमने मत देना।
सल्फा ड्रग दे सल्फा ओक्सीन जेन्टामाइसीन को इन्जेक्ट कर
छींके आने की दवा न हो तो लाल मिर्च नाक के सामने रख दो पर सांस आने दो।
 तेरे मुँह से भी मेरे मुँह में हवा ड़ालती जा। पंखा जोर जोर से फटके से झल ।
 मुझें उल्टा करके मेरी पीठ दवाने से मेरे में हवा ज्यादा आई।
बीस घंटे बाद
अभि निमोनिया है फैफड़ो में अंदर । फौरन एजोथोमाइसिन का इन्जेक्शन लगा। 25 सी सी हो ।

पच्चीस घंटे बाद
देख नाक से काला खून आना बंद हुआ क्या

ग्यू ने कहा हाँ
 काला खून तो नहीं पर पतला लाल खून आ रहा है ।
द्वारका ने कहा यानि खून का टुटना रूका है। जल्दी कैप्सूल औरौफर एक्स टी दे।
छत्तीस घंटे बाद
द्वारका ने कहा मुझें दूध का आधा गिलास हल्दी शहद ड़ाल कर दे।
हल्के गर्म पानी से स्पंज कर छाले फूटने नहीं चाहिये।
दो घंटे बाद
पिशाब ले ट्रे में देख पीले रंग का आना चाहिये यानि खून का रिसाव बंद हो गया है।
किड़नी काम कर रही है सोड़िम बाइकारबोने्ोट दे टोरसीमाइट टेबलेट 5 एम जी दे
उस की ऑखों में नींद आना शुरू हो गई थी।
एक घंटा सोया ।
ऑख खोल कर ग्यू की तरफ मुस्कराते हुआ बोला देख मरा तो नहीं
ग्यू ने रोते रोते कहा मरे तुम्हारे दुश्मन
तुम थोड़ी देर आराम से लेटे रहो।
बाहर बहुत शोर शराबा गाडियों की आवाजें आ रही है देख कर आती हूँ।

ग्यू ने बाहर आकर देखा तो दंग रह गई ।
हज़ारों की भीड़ सैंकड़ो जीप गाड़ियाँ थी।
मेरे को देखते ही सन्नाटा छा गया।
मैंने हाथ खड़ा कर के कहा डॉ कोटनिस ठीक हैं।
भीड़ से निकल कर माँ मेरे पास आई ।
कहने लगी लोगों को खड़े खड़े बीस घंटे हो गये है प्रार्थना

कर रहे है तेरे पति के स्वास्थ लाभ की।
मैंनें माँ को कहा पर हमने तो सारी बात हम दोनों में ही रखी थी लोगों को पता कैसे चला द्वारका की योजना का।
माँ ने कहा तूने सन यत सेन के लड़के से बात करी और उसने अपने पिता से वो मुझें पहचान गये और गाडी भेज कर मुझें ढूंढ निकला और बुला लिया।
ग्यू ने पूछा माँ इतने साल तुमने कुछ नहीं चाहा आज क्यों उनसे कुछ माँगने गई।
माँ ने कहा मैं तो यत सेन को कहने गई थी कि मेरे दामाद को हिन्दुस्थान वापस भिजवा दो उसकी योजना जान लेऊ है मेरी लड़की का सुहाग उजड़ जायेगा।
ग्यू ने कहा फिर
फिर क्या हम आठ दस लोग मिल कर द्वारका को समझाने आये थे । बिमारी जैसे आई है चली जायेगी।
तू अकेला चना क्या भाड़ फोड़ लेगा।
ग्यू ने कहा फिर
माँ ने कहा फिर तेरा सिर। गाड़ियों का हुजुम देखा तो जनता पींछे पींछे हो गई। आठ घंटे में तो पूरे जिले में खबर फैल गई।
यहाँ आकर देखा तो तूने तो उसको मारने की सारी तैयारी चालू भी कर दी।
अब बता द्वारका कैसा है। उस पगले की सेहत के लिये सारा देश दुआऐ माँग रहा है।
अथक मेहनत गम्भीर रूचि औरअधीकतम सतर्कता से सम्पूर्ण एक मिश्रन तैयार हुआ।
जापान से भी खाली इंजेक्शन सुईयाँ आ गई थी

द्वारका ने ग्यू से कहा हमारा ध्यान एक ही लक्ष्य पर केन्द्रित

करो।
यह काम हम दोनों को ही करना हैं और दस से पन्द्रह दिनों तक उनको देखना है।
मैं तो यह कहूँगा उन परिवारों को अस्पताल में ही बुला लो ताकि उन में होने वाली हर तब्दीली को नोट कर सकें।

ग्यू ने कहा यह आसान बात नहीं है। पूरी बस्ती से दुखी तीन परिवारों को लाना
और दस दिन यहाँ रखना काफी चर्चा का विषय बन जायेगा। इससे तो अच्छा है
हम हर चार घंटे में उन्हें देख आयें।
मैं तो कहती हुँ उस बस्ती के चार हजार मजदूरों को ही टीकाकरण करो। सेना के बीस सैनिक साथ लो हर एक को टीका लगाओ तो हमारे को सन्तोषपद नतीजे मिलेंगे ।
द्वारका ने ग्यू को सामने बैठा कर कहा
देख हमारी योजनाऐं अभी तक सफल हुई हैं। मैं इस को दो भागों में बांट कर आगे बढ़ना चाहता हुँ। ऐक भाग आप सम्भालो। दूसरा मैं ।

ग्यू ने कहा अगर मेरे पर ही छोड़ दोगे तो मेरे से काम नहीं होगा।

द्वारका ने कहा हम साथ ही तो हैं पर तुम्हें ही आधा काम देखना है।

वह है टीका करण

23 जिलें हैं। हर ऐक के 15 उप केन्द्र। उनके 20 उप भाग। एकभाग 100 नागरिकों को टीका लगायेगा।

तुम्हें यह देखना है हर ऐेक उप भाग तक टीके की पेटी पहुँचे और लगे।

ग्यू ने पूछा और आप क्या करोंगे

द्वारका ने कहा मखिंयाँ मारूँगा
अरे मेरे ड़ाक्टर साहेब। टीकों का उत्पादन कराउँगा।

द्वारका ने कहा पास ही में बीजिग बड़ा शहर है जिसकी घनी उद्योगिक आबादी है
सैंकड़ो लोग रोज मर रहे हैं। इस शहर को चार सेक्टर में बाँटों।
उसके 50 केन्द्र। हरके 10 उप और इसके प्रत्येक को टीका लगे।
कल ही 10 हजार टीके जीप में साथ ले जाओ। हर रोज इतना ही
आयेगा। 15 दिन वही ही रहो और मृत्यु को रोको।
जिन जिलों में टीके लग जायें वहाँ से कार्यकर्ताओं को आगे ले जाओ।

ग्यू ने कहा मैं 15 दिन तुम से अलग नहीं रह सकती।

द्वारका ने कहा तुम अकेली कहाँ हो। अकेला तो मैं हो जाउँगा।
केन्द्र के सचिव अफसर ऑकड़ें मांगने लगें ।
जनता से सेवा भावी संस्थाऐं सक्रिय हो रही थी। तन मन

धन से लोग
महामारी को रोकना चाहते थे वे टीका करण में रूचि लेने लगे।
जिन केन्द्रों में टीका लगा उस क्षेत्र से मृत्यु दर रूकी।
ग्यू के लिये यह उत्साह वर्धक समाचार था। लेकिन कठीनाईयाँ भी उतनी सामने आ रही थी। उनका हल ढूँढने वह द्वारका से परामर्श करती रहती थी।
सब से बड़ी यह समस्या थी कि टीका उत्पादन फैक्ट्री से माल केन्द्रों तक पहुचने तक 25 फी सदी टुट जाता था।
ड़ा कोटनिस ने श्रम विभाग से पाँच लाख मजदूरों को माँगा जो गत्ते के या चमड़ों के थैले बना कर माल पहुँचाये। गाँवों तक सड़के नहीं थी उनको बनवाने के लिये विभाग खुलवाये। उनकी देख रेख का दायरा बढ़ता ही जा रहा था। ग्यू से दूर होते जा रहे थे।
उनका स्वास्थ गिरने लगा ।
ग्यू का भी वैसा ही हाल था। शहरों की घनी आबादी में जाना वहाँ केन्द्रों की स्थापना व्यवस्था। टीकाकरण। फिर मृत्यु दर के आंकड़े ये सब काम ही इतने होते थे कि वह चार घंटे भी सो नहीं पाती थी।
उसके पेट में पलता जीव भी उम्मीद करता था कि आराम करें पर माँ के पास तो समय
रहता ही नहीं था।
आठ महिनों में 23 जिलों में टीका करण हो गया।
महामारी से मृत्यु दर लगभग शून्य हो गई।
बीस लाख लोगों को रोजगार मिला।

1941 का नया साल आया।
इस नव वर्ष में ग्यू ने पुत्र को जन्म दिया।

महामारी का सर्वनाश हो गया था।
चीन के हर घर में हर व्यक्ति की जुबान पर एक ही नाम था के डी हूआ यानि कोटनिस। या नंगे पाँव वाला ड़ाक्टर।
ग्यू ने पुत्र का जन्म नाम वही रखा जो नानी ने रखा था: यीन हूआ यानि इन्ड़िया चीन।
ड़ा कोटनिस का स्वास्थ वैसे ठीक नहीं रहता था कारण उलझनें और दायित्व
बढ़ गये थे। उन पर मिर्गी के दौरे ज्यादा आने लगे।

एक रोज ग्यू को कहा हमारे लड़के को ला और मेरी गोद में दे।
ग्यू के हाथ काँप रहे थे उसे कोई अनहोनी की आँकांशा दृष्ठिगोचर
होने लगी। वह दौड़ के गई यीन को लाकर द्वारका के सीने पर लिटा दिया और खुद भी उसके सीने पर अपने होठ रख कर रोने लगी।
ग्यू ने महसूस किया द्वारका की धड़कन धीरे धीरे कम हो रही है। वह
जोर से चिल्लाही द्वारका द्वारका वो ही नी आई लव यू
लेकिन द्वारका नहीं रहा।
ड़ा द्वारकानाथ सान्ताराम कोटनिस का 32 वषर्ा की अल्प आयु में निधन हो गया।
चीन में शोक की लहर छा गई। उनकी मृत्यु का समाचार बिजली की गती से सर्वत्र फैल गया। हर चीनी की ऑखों में ऑसू था।
सब बाजार प्रतिष्ठान बंद हो गये। सरकारी भवनों पर झंड़ें आधें झुकाये गये। कई जगह शोक इतना भावनात्मक

रूप ले गया कि लोग आत्म दाह तक पर उतर आये जिन को पुलिस ने बड़ी मुश्किल से रोका।
उनके शव का अंतिम संस्कार करने के लिये हर शहर से माँग आने लगी।
लीयोनिग प्र्ऱॉत के ड़ालीएन शहरवासीयों ने तो भूख हड़ताल का ऐलान कर दिया कि हमारे शहर में ही उनकी कब्र बनेगी क्योंकि वहौ एक दिन में साठ
हजार नागरिक मरे थे उस समाचार से ड़ाक्टर गम्भीर चिंता में डूब गये और बडें दुखी हुऐ और खुद टीकाकरण की टीम लेकर वहा गये और उस शहर के हर नागरिक को टीका लगवाया। परिणाम स्वरूप दिन से दस दिन तक एक भी मौत नहीं हुई। वे घर घर जा कर टीके लगवा रहे थे। इस भाग दौड़ में उनको अपने जूते खुलजाने का भी होश नहीं रहा और वे नंगें पाँव ही काम करते रहे। वहाँ की जनता का दिल ऐसा जीता कि वहाँ के शहरवासियों ने यह उपरोक्त माँग करली।
उनका पार्थिव शरीर को ड़ालियान के नगरवासियों को सौंपा गया।
तत्तकालिन चीन के प्रधान मंत्री ली केक्यीयॉग ने यह घोषना की
ड़ाक्टर द्वारकानाथ सान्ताराम कोटनिस की आदमकद मूर्ति चीन की जन क्रांति के शहीदों के साथ राष्ट्रिय स्मारक स्थल पर स्थापित होगी।
उन की स्मृति हर चीनवासी के मन में है ।
जब तक चीन का इतिहास रहेगा ड़ाक्टर द्वारकानाथ सान्ताराम कोटनिस अमर रहेंगें।